लेखक परिचय

बच्चन की ख्याति मधुशाला की रचना के साथ [illegible] जो सन् 19[illegible] में प्रकाशित हुई थी। इसके तीन वर्ष पूर्व इनकी कविताओं का प्रथम संग्रह तेरा हार प्रकाशित हुआ था। उस समय भी काव्य प्रेमियों का ध्यान इनकी ओर आकृष्ट हुआ था। मधुशाला ने [illegible] लोकप्रिय बना दिया।

हरिवंशराय बच्चन का जन्म [illegible] ७ नवम्बर [illegible] को प्रयाग में हुआ था। इनकी शिक्षा म्युनिसिपल [illegible] कायस्थ पाठशाला, गवर्नमेंट कालेज, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी तथा काशी विश्वविद्यालय में [illegible]। १९४१ से [illegible] तक वे इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में अंग्रेजी के लेक्चरर रहे। १९५[illegible] से ५४ तक [illegible] में रहकर [illegible] कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी से [illegible] की उपाधि प्राप्त की। विदेश से लौटकर [illegible] वर्ष अपने पूर्व पद पर तथा कुछ मास आकाशवाणी इलाहाबाद में काम किया। दिसम्बर [illegible] में भारत सरकार ने इन्हें विदेश मंत्रालय [illegible] विशेषज्ञ के रूप में बुला लिया जहाँ दस वर्ष रहकर [illegible] राजनयिक काम काज [illegible] बनाया। अप्रैल १९६६ में [illegible] राष्ट्रपति ने इन्हें राज्यसभा का [illegible] मनोनीत कर लिया।

बच्चन का कहना है कि मैं जीवन की समस्त [illegible] को कविता का विषय मानता हूँ [illegible] मैं मानता हूँ कि मृत्यु और जीवन में मरण भी सम्मिलित है। [illegible] सुमित्रानन्दन पंत ने इनके पूर्ण कवि जीवन को इन पंक्तियों में व्यक्त किया है

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]



राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली

बच्चन

कटती प्रतिमाओं की आवाज़

मूल्य आठ रुपये

पहला संस्करण अक्टूबर १६ ८

KATATI PRATIMAON KI AWAZ by B hchz
P etry
8-0

समर्पित

स्वर्गीय राजनमल चौधरी की स्मृति में

अपने पाठकों से

मदता प्रतिमाओं का आवाज के नाम स अपनी स्फुट मकिनाओं व। नवीनतम मग्रह आपके हाथों म रख रहा हू—रचना-काल म मेरी मन स्थिति मन स्थिति मात्र क्या मेरे सपूर्ण व्यक्तित्व के विकास ह्रास-परिवतन का सकतक।

य कविताए सन् १९६७ ६८ म लिखी गई है—यानी मेरे आयु के छठे दशक के अन्तिम और सातवें दशक के प्रथम वर्ष म। इसकी याद दिलाकर इन कविताओ के लिए पाठकों से रियायत माँगने इनके प्रति किसी प्रकार के कदाचित सम्मान की प्रत्याशा रखने अथवा इनकी किसी नई विशिष्टता की ओर सकेत करने की मंशा किंचित नहीं है। रचना के काल—जिसम देश का लगता परिवेश भी सम्मिलित है—का लेखा जोखा का निजी सवदनशील चेतना स परिचालित और विशिष्टी कृत—और रचयिता की वय और वय प्राप्त अनुभव का प्रभाव अपनी रचना पर पड़ना अनिवार्य है यह गणित के किसी फारमूले स प्रभाव का वर्गीकरण कर देना यदि असभव नहीं तो कठिन अवश्य है। प्रतिभा की बात मैं नहीं करता —वह तो सब स्थिति रीति नीति नियम पर—चाहे वे उसके ही बनाए क्यों न हो—हावी रहा है—साधारण जन भी अपने लिए नियम नीति और देश का दावा करने के अधिकार न तो शायद हो आप मुझ वंचित करना चाहें पार के पारम्परिक ... परिणामों म कुछ भिन्न करने की क्षमता रखता है —अपने सर्जन स उसका विश्वास मजबूत होता है यह दूसरी बात है और यहाँ आपका ... ... नहीं। ... ... रचना ... ... अपना ... है रचनाकार का यह ... ... है और रचना ... ... स स्वतन्त्र हो कर भी अपने लिए ... ... सकती है ... स्वतन्त्र स्थान बना सकती है। मैं चाहूँगा कि ... ... आप इस सग्रह की कविताओं को देखें। ... ... होती है।

यह मेरे बताने से अधिक आपके अनुभव की बात होगी कि जीवन आज कैसे तेजी से बदल रहा है और बदलने के क्रम में टूटना बिखरना बिगड़ना बनना—सब कुछ शामिल है। इसका प्रभाव सबसे अधिक और सबसे पहले चिंतक और भावक अथवा चिंतक भावक या भावक चिंतक वर्ग पर परिणामतः साहित्य और विशेषकर कविता पर पड़ना स्वाभाविक है। कविता आज मान्य और स्वीकृत रूपों को छोड़कर युग जीवन के अनुरूप नए स्वरूप नए स्वभावों की खोज में है। यह परिस्थिति जहां काव्य प्रतिभा के लिए बड़ी भारी चुनौती है वहां बड़ा अनुकूल अवसर भी है—पुराने तथ्यों के मलबे के ढेर और नए उभरते यथार्थ के अंबार से सृजन-तत्त्वों को चुन-चुन कर और एक अभिनव सृष्टि को साकार करने में और यदि पैनी परिशोधनभरी दृष्टि प्राप्त हो सके तो युग जीवन के विकास और उत्थान के लिए अनंतिम रूप से ही सही नए मूल्यों अथवा नए आदर्शों कम से कम नए तथ्यों नई राहों को निरूपित अथवा निश्चित करने का भी। समय सापेक्ष रहते हुए समयातीत बनना उत्कृष्ट कृति के सृजन का निकष भी है विशेषाधिकार भी। किसी भाषा अथवा साहित्य के आंतरिक बल की परीक्षा ऐसे ही समय होती है। कैसे इस संकट की घड़ियों में क्या उसके लेखक और कवि आत्म विश्वास के साथ बढ़ सके हैं?— जो भारत विश्रान्त कगार पर रास्ता अब भी है! (आरती और अंगारे)

आज जहां एक ओर लेखक का संकट बन गया है वहां दूसरी ओर पाठक की घबराहट भी बन गई है। कवि तो कविता की सत्ता बचाने—अपनी सत्ता बचाने के उसके संघर्ष का इतिहास बन जाए—उसे पुनर्स्थापित करने और सुरक्षित रखने के जद्दोजहद में लगा है और पाठक है कि फिर से लाना चाहता है पूछता है कि कविता क्या है? इसी उलझन और हड़बड़ी की घड़ी में उसे इतना भी समझने की फुरसत नहीं कि कविता वह है जिसे कवि कविता कहकर दे जिसे पाठक कविता समझकर ले और समय जिसे कविता सिद्ध कर दे—केवल समसामयिक कालातीत महत्त्व अमरत्व का भले ना हो साहित्य का नहीं होता। और समय के उपकरणों में है उत्तम बुधजन (जो प्रबंध बुध नहिं आदरहीं सो श्रम बादि बाल कवि करहीं) मध्यम समालोचक गण (जो हंसवत् गुन गहहिं पय परिहरि बारि बिकार) नीच अज्ञों के अर्थ में नहीं ज्ञानी के अर्थ में नहीं अल्पज्ञ पाठक वर्ग (जो पाठ्यक्रम में लगे जान पर किसी भी कृति में सब प्रकार के परीक्षोपयोगी गुण खोज निकालते हैं अथवा निकाल नहीं पाते हैं) — हैं और हमारे परिणाम अनिच्छा से भी है कि हमारे यहां बुधजन और समालोचक गण के अभाव की पूर्ति इसी पाठक वर्ग में से की जाने लगी है और नये

जो किसी वस्तु को इसलिए बुरा कहते हैं क्योंकि वह अच्छी है। किसी अच्छी वस्तु में निरंतर रुचि जगाए रखने के लिए वे कितना बड़ा योग देते हैं इसे वे स्वयं नहीं जानते —क्योंकि बात का निर्णय तो बहुत सहज और बड़ी फुरसत से होता है—निरवधि जो वह ठहरा—सो तब होता है जब सब का मुँह बंद हो जाता है —इन्हीं के लिए बाबा तुलसीदास ने कहा था बात कहहिं बलवंत कठोरा। घटिया को बढ़ा-चढ़ाकर कहने वाले उसका कितना विज्ञापन करते हैं कितना लिख! और अंत में तो वर्गीकरण के क्रम में उपयुक्त या यथेष्ट नहीं बल्कि मेरी दृष्टि में सर्वोपरि व असुन्दर साधारण किन्तु रुचि ... प्रकार के निदान नहीं भावी पाठक जो अपनी किसी आन्तरिक माँग की पूर्ति के लिए बराबर कविता के पास पहुँचते अथवा कविता को अपने निकट लाते रहते हैं और इस प्रकार कविता और जीवन के अपरिहार्य अनिवार्य सम्बंध की पुष्टि करते रहते हैं। समय के उदाहरण समय तो अपना काम करेगा ही। तात्कालिक महत्त्व इस बात का है कि जिसे मैं कविता कहता हूँ उसे आप कविता समझकर ले रहे हैं या नहीं? यदि मुझसे परिवर्तन प्रियता नयी-सुरुचि उदार हृदयता और सहृदयता — अर्थ के ... लिए के प्रति भी —मैंने पाया है साधारण पाठक के सहज गुण हैं। इतना सम्पन्न पाठक भी मेरी रचना कविता समझकर ग्रहण न की जाए तो मैं अपनी रचना को टटोलना चाहूँगा। मैं अपने पाठकों के साथ न हो सकूँ तो मैं यह सोचने को विवश होता हूँ कि वे पीछे छूट गए हैं। स्थिति दूसरी भी हो सकती है। जीवन की गति तेज़ी और गाम्भीर्य से प्रायः तेज होता है।

इधर प्रस्तुत संग्रह के नाम के सम्बन्ध में। मैंने इसे बहना प्रतिमाओं की आवाज़ कहा है क्योंकि इसकी कविताएँ लिखते हुए बारबार मेरा ध्यान उस विघटन विपर्यय और विस्थापन की ओर गया है जो आज हमारे बाहर और बाहर से अधिक भीतर चल रहा है। पर इस विघटन और विस्थापन के बीच कहीं कुछ स्थिरता भी तो रहा है। मैं समझता हूँ, इसका भी आभास मुझे है और मेरे सृजन में जाने-अनजाने कहीं न कहीं यह प्रतिध्वनित भी हुआ है। मुझे प्रतीत होता है कि टूटती प्रतिमाओं में बनती प्रतिमाओं की ध्वनि भी मिश्रित है। एक बार मैंने एक सज्जन से पूछा था कैसा लग रहा है? उत्तर था कैसे बताऊँ कहाँ हूँ। टूटने अथवा बनने किसी अर्थ में प्रतिमाएँ बनती हैं तो आवाज़ होती है और ... अन्तर यदि प्रकाशक के हृदय-मन्दिर में प्रतिष्ठित है तो गूँजता घूमता ... इस ... के लिए ... करता है। टूटने की आवाज़ों के ... हो ... भी ... आप की ... उठी और ... साथ ... कर ...।

विघटन और सजन —रचना के प्रति यदि कंचित सजग रहने की मन स्थिति म जो कुछ लिखा गया उस सग्रह रूप म प्रस्तुत करन की बात सामने आई तो मनम यह विचार भी उठा कि विघटन परक और सजन परक कविताओ को अलगाकर उन्ह दो सग्रहो म दिया जाए और चूकि कटन शब्द स टटन-बनन दोनो का बोध होता है इसलिए ज्यादा अच्छा हो एक ही नाम के सग्रह के दो खण्ड म। पर इस दष्टि स कविताओ को अलगाना असभव सिद्ध हुआ—बहुत-सी कविताए दोनो के लिए नलकी तो बहुत-सी दोनो स उदासीन रहा। एक बार ऐसा दुष्प्रयास मैं पहल भी कर चुका था और बहुत सफल नही हुआ था। किसी के लिए भी यह कहना म क्या लगता था कि अमुक कविता पहल की दूसर और दसर की पहल खड म होनी चाहिए थी। सजन विघटन न तो सफाई स अलग अलग हो रहा है न समान रूपो म हो और न अलग-अलग समान पृष्ठो म उनकी अभिव्यक्ति हो हुई है फिर भी दोनो खण्डो को प्रस्तुतीकरण की दृष्टि स लगभग बराबर ही रखना उचित होता। साथ ही दोनो खण्डो को समान रखना कृत्रिम भी होता अवास्तविक भी। कोरा कविता म कृत्रिमता स्वाभाविक है पर मैं स्वाभाविकता के अधिक स अधिक निकट रहन का प्रयास करता हू। आप ऐसा हो समझें कि चूकि सख्या म कविताए अधिक थी इसलिए उन्ह दो खण्डो म प्रकाशित किया जा रहा है गुण की दष्टि स उन्ह पहल या दूसर खड म नही रखा गया। क्रम लगान म केवल इस बात का प्रयत्न किया गया है कि एक के बाद दसरी कविता और पहल के बाद दसरे खड को जान समय आप किसी असुविधाजनक गड्ढ-खाई का अनुभव न करें और आपक मन के चरण उबड खाबड धरातल पर न पड़। कविता और कविता के बीच सुविधा जनक खिलना को अपनी कल्पना स भर लन की प्रतीक्षा प्रत्यक सचत पाठक स की जाती ह। दोनो खण्डो के प्रकाशन म समय का कुछ अतराल रख दिया गया ह। जब तक आप पहल खण्ड की कविताओ म रम चक होग दूसरा खड भी आपक सामन आ जाएगा। मेरा विश्वास है कि अन्त म जो निर्णय मैंने लिया है वह मर पाठको को उचित प्रतीत होगा। आप दोनो खडो को स्वतत्र खण्ड भी समझें तो काव्यास्वादन की दष्टि म कोई बाधा नही उपस्थित होगी और मुझ इसम आपत्ति भी क्या हो सकती है। किसी अवधि विशेष म लिखी हुई कविताए काल और कवि की तत्कालीन अवस्था की एक छाप लिए होती हैं। इसका आभास सभवत आपको इन दोनो खडो की रचनाओ पर होगा यही उनकी एकता और सबध का सूत्र है। बस क्रय विक्रय की सुविधा को ध्यान म रखकर दूसर खड को एक अलग नाम दे दिया जा रहा है—उभरत प्रतिमानो के रूप जिसकी सार्थकता पाठक आपस छिपी न रहगी।

स्फुट कविताओं के संग्रह में क्रम लगाना बड़ा कठिन काम है। एक तरह से अपने आप में यह एक कला है। सुनता हूँ कि पाँचों उँगलियाँ बराबर नहीं होतीं। दो कविताएँ भी सामने हों तो एक के अच्छी दूसरी के कम या ज़्यादा अच्छी या एक के बुरी और दूसरी के कम या ज़्यादा बुरी होने का आभास होना स्वाभाविक है। कारणों की तफ़सील में यहाँ न जाऊँगा। पाठकों की व्यक्तिगत धारणाओं में स्वयं विविधता की काफ़ी गुंजाइश है। फिर जहाँ ढेर सी न ऊपर कविताएँ सामने हों वहाँ क्रम आयोजक की कठिनाई का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है—खासकर स्तर का उतार आता किना अथवा किन्हीं प्रत्यक्ष या सूक्ष्म सूत्रों में अनिबद्ध रचनाओं को एक साथ के निकट रखना पर इसका भी ध्यान रखना हुआ कि एकरसता न आने पाए, पाठक की ग्राहिका शक्ति पर अधिक ज़ोर डालनेवाली रचना के पूर्व मानसिक तैयारी के रूप में अथवा उसके प्रभावों को अधिक स्पष्ट या प्रभावी बनाने की दृष्टि से कोई तरल सरल रचना रख देना बाद की विश्राम-सा देने के लिए किसी हल्की-फुल्की रचना को। संकट के अनुभव पर विश्वास करें तो संकलन का क्रम भी कुछ ऐसा ही चलता है। ये सारी बातें ध्यान में रखी गई हैं। फिर भी स्फुट कविताओं के संग्रह के विषय में सम्पूर्ण प्रभाव की बात तत्काल बना रहना सम्भव नहीं है। पर यह निर्णय तो पाठक का ही है। ऐसी किसी कृति का मूल्य-निर्णय उसकी उत्कृष्टतम उपलब्धियों में होना चाहिए जैसे पहाड़ की ऊँचाई का उसकी चोटियों से। पर यह भी ज़ाहिर है कि चोटियाँ अपने में नहीं गिनी जा सकतीं। एक तलहटी का होना भी ज़रूरी है। इस नज़र से तो कुछ कविताएँ अन्त में आतीं ही। इसे इस आधार पर की बुद्धि में हो रहा चाहिए। उनको इस निर्णय अथवा ऐसा मानने के लिए सुनने या समर्थन की भी बात की जा सकती है। मैं अपने पाठकों को इस भूल में पड़ने से आगाह करना चाहता। मैं इसके बाद इतना सरल और मर्यादा-मुक्त न बनाना चाहता। प्रस्तुतीकरण की वर्तमान विधि में इस क्रम की विशेषता समझते हुए उस ओर ध्यान जाना चाहिए। निश्चित करने तथा इनके आधारों का क्रम सम्पन्न करने का पूरा स्वतन्त्रता है। मेरा विश्वास है सम्पूर्ण बीच की सीमा में भी अपने निजी और विविधता के सम्भावनाएँ कम नहीं हैं। यह ध्यान में रखना चाहिए कि प्रत्येक रचना अपने आप में एक सृष्टि है—अतएव स्वतन्त्र। जो यह मान करता है कि उस पर जो भी निर्णय दिया जाए वह किसी अन्य के सम्बन्ध में अपना किया जाए सम्बद्ध न हो भले ही वह इस क्रम में स्थान पर हो या सबसे बाद की।

जो भाषा मैं कम्पन और विषम निराश हूँ उनका अन्तिम पंक्ति में स्फुट

जितना वि नाम है उसमें अधिक वि वास मुझ उनकी सजन क्षमता म है जो यह भाषा बोलते और उसमें लिखते हैं। मैं पुराना प्रतिमाओं के टूटने से नहीं घबराता। टूटने से कोई बच भी नहीं सकता —बाबा समाहनसिंह प्रवत — पर नई प्रतिमाओं के उभरने से कोई रोक भी नहीं सकता। नई प्रतिमाएं निश्चय ही गलत होंगी साथ ही बाद लोग नए प्रतिमान लायेंगे फिर वे भी टूटेंगे फिर बनने के लिए। विघटन का अनिवाय प्रक्रिया के साथ सजन को अपरिहार्य सक्रियता भी अनवरुद्ध चलेगी। विघटन मुखर घड़ियों में हम इस विश्वास को दृढ़ता से पकड़ें। मप्राण जातियां और भाषाएं भी निर्ममता से सहार का सहारती और सृजन के साथ निमाण करता हैं। सहार निमाण की घड़ियों के तुमुल निनाद में एक स्वर मेरा भी—इससे अधिक मुझ कुछ नहीं कहना है।

अब आप हैं और मेरी कविताएं हैं।

गहरे में जाने पर मेरी अनुभूतियों से जो सह अनुभूतियां आपको जागेंगी उनका उद्घाटन कर सकेंगी तो मेरी कविताएं सार्थक होंगी। जो कविताएं पाठक से कुछ न सृजन की क्षमता नहीं रखती वे उसे कुछ देने में भी असमर्थ रहती हैं।

इस संग्रह के अथवा इसकी किसी रचना अथवा किन्हीं रचनाओं के संबंध में आप अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करना चाहेंगे तो सुनने को मुझे हमेशा उत्सुक पाएंगे।

१ विलिंग्डन क्रिसेंट —बच्चन
नई दिल्ली ११
२५ अगस्त १९ ८

प्रस्तुत संग्रह में संगृहीत करने कविताओं को प्रथम प्रकाशित करने और प्रस्तुत संग्रह में संग्रहीत करने की अनुमति प्राप्त हुई इसके लिए उनका धन्यवाद—बच्चन

सूची

फटती प्रतिमाओं की आवाज़

तिलांजलि

काश यह कुअवसर न आता
कि मुझसे
(जो मैं तेरे पिता की उम्र का हूं)
तिलांजलि तू पाता।

तू बन राजरमन
बन में आया था
आज जनम विस्फार
धन में गया
सुन बहुत बुरा
भागा जिया लिया गया।

पर हां तो
हर घड़ी उठता है
सुन पर का था
उगा का प्रकार लिया
जबर न।
पर मैं बहुत बुरा
मर गया।

तू जा लिया
जा भाग

वह काटा भी जा सकता है
बांटा भी सकता है भाग
पर तूने तटस्थ रहकर अपने को देखा
(तो जिन्दगी के एक हिस्से को ही देखा)—
यह था तेरा
साहित्यिक योग।

तू धूमकेतु के समान आया
और हमारी धरती को
बुहारता चला गया।
इस ज़माने में
कोई किसी की ज़बान कैसे थामे
कल्पना न करता कैसा—
चढ़ा था।

कल्पना न मिटाई हो
उनकी भी मैं
यह तो जब तू चला गया
तब हमने देखा
कि हमारे घर में
कितना कूड़ा था

दागनिक ग्रौर कवि

शागनिर हो
तुम्ह दन मान्ता है
कि परज या न एआ
उगर पाम भा न जाना
वग गारा वाम म वाा ।

कवि हो
तुम्न यना मान्ता है
ति परज क पाम हा न आजा
गरा एआ हा नग
उार पर म भा मना धगा ।

उल्टी प्रक्रिया

देव मानकर
हम अपने अग्रजों पूर्वजों का
पूजन करते रहे
और खुद बौने बनते गए
बन गए।

आओ इस प्रक्रिया को उलट दें
अपने अग्रजों पूर्वजों को बौना बनाकर
उनकी अच्छी पूजा करें
और खुद बावनगजा बनें।

चर्चा

चर्चा चर्चा चर्चा
चर्चा में और कुछ नहीं चर्चा
पर कुछ बदनाम हैं
चर्चा के गुलाम हैं।

[illegible] की आवाज

दो रूप दो सलूक

जा पिता जा !
आपको मेरा नमस्कार बारबार
जहाँ तक आप जनक हैं
पालक पोषक शिक्षक प्रगति के प्रेरक हैं
(बडा मन्द है कि आप कुछ और भी हैं)
जहा आप
सडी गली रूढियो के प्रतिनिधि है
प्रतिगामी पोगापथियो के ठेकेदार
(और कुछ और भी जो मुझसे न कहा जा)
वहा आपको मेरा ठोकरें
एक दो तीन चार !

परिवार नियोजन

आबादी बढ़ गई है
घटनी चाहिए
सब मानते हैं
पर जनता का [illegible] न [illegible] करना चाहिए
[illegible] [illegible] युग का [illegible] मानते हैं।

नये न आए
पुराने हटे रहें
दुनिया की बुढ़िया—
नाना-नानी—
[illegible] [illegible] [illegible] चला जाए
सो यह [illegible] [illegible]
कि दुनिया [illegible] [illegible]—
दुर्गतियाँ [illegible] [illegible] [illegible]
पुरुष फिर उगाए [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] का [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] रहा।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] न [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पुर है
और अब [illegible] है

चुके हैं चुचके हैं
जो दून-स्कूल हैं
नामूस दकियानूस हैं
बेकार बकवासी बमतनब भावी है
हर नई बात के नपुंसक विरोधी हैं
भारत सरकार ऐसा विधेयक क्यों न पास कराए
कि वे सब— पचास के ऊपर—
एक दिन
अफीम की पुड़िया खाएं और सो जाएं।
और हां फिर न उठें जम्हाएं।

प्रायश्चित

मनस्वी और पत्र
छत पर से पुकार-पुकारकर कहते हैं
कि हमने तो आक्रोश कर लिया है
तो गुनहगार हम नहीं हैं।

पर कुछ उनको
गुनहगार समझते हैं।
(क्या?
अनुमान है भी कर सकते हैं।)
सो उनके लिए
प्रायश्चित करने जाने का कम लगता है।

शब्दों का भरोसा

कवि जी महाराज
शब्दों का भरोसा उठाइए
भाषा में निखरिए
सच है भी आप
आप क्या समझते हैं
आप ही बन्धन के सार हैं
भरोसा आपका किसी से छोटा भी हो सकता है
इसलिए आपका किसी से भी ऊंचा नहीं।

दो नग

पूछा ग
तुम ईमक गाप
ग नगाव हो
क्या मजा पाते गे ?

मजा यह पाता हूं
कि वह मेरा मन ईंडाता है
मैं ईसका मन ईंगाता हूं ।

दो मौसमों में

खस की टट्टियाँ
गरमी में
भिगाई जाती हैं
गरम हवा को छान छान ठंडी करती हैं
सुगंधित बनाती हैं।

खस की टट्टियाँ
बरसात में
भीगती हैं
सड़ती हैं
बदबू फैलाती हैं।

आज का स्वस्थ

तुम्हारे गाँव का
न बुखार न खसरा
न कोई [illegible] बीमारी
न मलेरिया न मिर्गी
न उन्माद
न [illegible] की बीमारी
न पागलपन
न ओपरेशन
तो फिर [illegible] मुस्कराना क्यों है
कौन सा रोग ?
क्योंकि आज जो भी मुस्कराता है
बीमार है
और जो बीमार नहीं है
वह लाचार है। भूखा है।
बीमारी का इलाज है
लाचारी और भूख लाइलाज है।

दो मौसमों मे

खस की टट्टियाँ
गरमी में
भिगाई जाती हैं
गरम हवा को छान छान ठण्डा करती हैं
सुगंधित बनाती हैं।

खस की टट्टियाँ
बरसात में
भीगती हैं
सड़ती हैं
बदबू फैलाती हैं।